ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 210-211**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

परिचारिकाओं की रूचियाँ

डॉ0 शहनाज परवीन
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, (बिहार) भारत

Received-18.09.2024, Revised-25.09.2024, Accepted-30.09.2024 **E-mail : akbar786ali888@gmail.com**

सारांशः नर्सिंग जीवन वृत्ति को चुनने में लड़कियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं उनकी आकांक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीन समय में नर्सिंग व्यवसाय में उन महिलाओं का आगमन होता था जो मानव जाति की सेवा के आदर्श से प्रभावित होती थी तथा इस कार्य के लिए उनमें निष्ठा व्याप्त थी। परन्तु आजकल इस व्यवसाय में विषय सामाजिक समूह की महिलाओं का समावेश है, जो विभिन्न कारणों से उस व्यवसाय को अपनी जीविकोंपार्जन के लिए चुनती है।

कुंजीभूत शब्द– नर्सिंग जीवन वृत्ति, परिचारिका, प्राइवेट प्रैक्टिस, चिकित्सालय, जीविकोंपार्जन, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

नर्सों के वर्तमान तादात्म्य के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण विशेषता यह स्पष्ट होती है कि नर्सों ने एक प्राइवेट प्रैक्टिशनर के रूप में अपनी प्रस्थिति स्थापित कर ली है। संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिकांश स्नातक नर्स प्राइवेट प्रैक्टिस में लग गई है। चिकित्सालयों में तथा प्राइवेट स्वास्थ्य केन्द्रों पर चिकित्सकों की अनुपस्थिति में रागी की देख–रेख का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व नर्सों के ऊपर हो जाता है। धीरे–धीरे रोगियों के देख–रेख का उत्तरदायित्व नर्सों के ऊपर बढ़ता जा रहा है परिणामस्वरूप नर्सों की माँग औद्योगिक समाज में बढ़ती जा रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देश में पंजीकृत नर्सों में से 5 प्रतिशत नर्सें प्राइवेट प्रैटिक्स करती है। चिकित्सालय एवं उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं में नर्सिंग सेवाओं का महत्व बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार नर्सें एक संस्थागत कर्मचारी होती जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन परिचारिकाओं की रूचियों से नर्सों की रूचियाँ अलग–अलग होती है और इन रूचियों के विशलेषण से यह स्पष्ट होता है कि अब नर्स अपने खाल समय का उपयोग दूरदर्शन देखने, रेडियों सुनने, मोबाइल देखने, समाचार पत्र पढ़ने, पारिवारिक एवं सामाजिक पत्रिकाएँ पढ़ने आदि में बिताना पसन्द करती है।

अध्ययन उद्धेश्य– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्धेश्य हैं :

1. नर्सों के साहित्यक रूचियों की जानकारी प्राप्त करना।
2. नर्सों के सांस्कृतिक रूचियों की जानकारी प्राप्त करना।
3. नर्सों के नर्सिंग क्षेत्र में रूचियों को ज्ञात करना।
4. नर्सों के मनोरंजन तथा आनंद की विभिन्न रूचियों की जानकारी प्राप्त करना।

उपकल्पनायें– प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित उपकल्पनायें हैं :

1. नर्सें नर्सिंग व्यवसाय में अधिक रूचि लेती है?
2. नर्सें सामाजिक कार्यों में रूचि लेती है?
3. नर्सें देश की घटनाओं पर चर्चा करती है।

अध्ययन का क्षेत्र– नर्सें की रूचियों को ज्ञात करने के लिए पटना मेडिकल कॉलेज का चयन किया गया है।

निदर्शन पद्धति– प्रस्तुत शोध में समग्र के निर्धारण के पश्चात् शोधकर्ती ने दिनर्शन पद्धति के प्रयोग को उपयुक्त करना उचित समझा। इस हेतु निदर्शन पद्धति की दैव निदर्शन पद्धति का चयन किया। दैव निदर्शन पद्धति की लॉटरी पद्धति का प्रयोग किया। पटना मेडिकल कॉलेज के 200 नर्सों को एक सूची बनाई गई। पुनः बनाई गई सूची के क्रमांकों को कागज की पर्चियाँ बनकार एक बड़े डिब्बे में डालकर आपस में मिला दिया गया। सभी टुकड़ों को अच्छी तरह मिलाकर उसमें से 50 पर्चियाँ निकाली गई। इन पर्चियों में अंकित 50 क्रमांक के नर्सों को न्यादर्श माना गया।

सूचना के स्त्रोत– प्रस्तुत अध्ययन में नर्सों के तथ्य एवं सूचनाओं को निम्नलिखित स्त्रोतों द्वारा एकत्रित किया गया

प्राथमिक स्त्रोत– इस अध्ययन में प्राथमिक सूचनाओं का एकत्रीकरण प्राथमिक स्त्रोतों से किया गया है। नर्सों के साथ वैयक्तिक तथा सामूहिक साक्षात्कार द्वारा अनेक तथ्य एकत्रित किए गए हैं। तथ्यों के संकलन हेतु शोधकर्ती ने प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं चर्चा परिचर्चा का उपयोग किया। इस हेतु महत्वपूर्ण जानकारियाँ संग्रहित की गयी है।

द्वितीयक स्त्रोत– नर्सिंग व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक उपयोगि तथ्यों को द्वितीय स्त्रोत द्वारा भी संकलित किया गया है। द्वितीय स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं निष्कर्षों को आधार बनाकर अध्ययन किया गया, ताकि नर्सों के रूचियों को ज्ञात किया जा सके।

तथ्यों का निरीक्षण–परीक्षण– प्राथमिक एवं द्वितियक तथ्यों के संग्रहण के बाद उनका क्रमबद्ध निरीक्षण, परीक्षण किया गया ताकि उनका वर्गीकरण करते समय सुविधा रहे।

तथ्यों का वर्गीकरण– तथ्यों के सावधानीपूर्वक निरीक्षण–परीक्षण के पश्चात् उनका क्रमबद्ध ढंग से वर्गीकरण किया गया है, ताकि उनके आधार पर कुछ सही निष्कर्ष निकाले जा सके। नर्सों की सामान्य जानकारी तथा रूचियाँ एवं जागरूकता से सम्बन्धित अनेक तथ्यों की विभिन्न आधार बनाकर वर्गीकृत एवं साशीकृत करके निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण– अध्ययनरत नर्सें विभिन्न आयु समूह की है। 8 प्रतिशत, 22 प्रतिशत, 30 प्रतिशत, 24 प्रतिशत तथा 16 प्रतिशत नर्सें क्रमशः 25वर्ष, 26–30 वर्ष, 31–35 वर्ष, 36 से 40 वर्ष तथा 41 वर्ष से अधिक आयु की है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

76.7 प्रतिशत नर्सें सामान्य वर्ग की है 12 प्रतिशत अनुसूचित जाति, 3.3 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति तथा 8 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग की है। 18.0 प्रतिशत नर्सें अविवाहित, 74 प्रतिशत विवाहित, 1.6 प्रतिशत विधवा, 2 प्रतिशत तलाक प्राप्त तथा 3.7 प्रतिशत परित्यक्त है। 79.3 प्रतिशत नर्सों का मासिक आय दस हजार रूपये है तथा 20–7 प्रतिशत का मासिक आय दस हजार रूपये से अधिक है। 32 प्रतिशत नर्सें का नौकरी के अतिरिक्त आय के अन्य स्त्रोत है तथा 68 प्रतिशत के आय के अन्य स्त्रोत नहीं है। 65.3 प्रतिशत नर्सों के परिवार का स्वरूप एकाकी है तथा 34.7 प्रतिशत का परिवार का स्वरूप संयुक्त है।

नर्सों की तीन प्रमुख रूचियाँ कौन सी है, यह जानने का प्रयास किया गया। 82 प्रतिशत नर्स नर्सिंग सेवा 10 प्रतिशत टी. वी. तथा 8 प्रतिशत पर्यटन में रूचियाँ रखते हैं।

सामाजिक कार्यों में नर्सें रूचि लेती है, यह जानने पर 62 प्रतिशत नर्सें सामाजिक कार्यों में रूचि लेती है। सामाजिक कार्यों में रूचि लेना उनकी पसंदगी को दिखलाता है तथा नर्सें सामाजिक कार्यों के प्रति जागरूक होती है। यह विशलेषण से स्पष्ट होता है।

नर्सों से यह जानना चाहा कि वे अपने खाली समय को कैसे व्यतीत करना सर्वाधिक पसंद करते हैं। उसके प्रत्युत्तर में 19.6 प्रतिशत नर्सें मित्रों के साथ, 3.7 प्रतिशत रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल के द्वारा, 32.7 प्रतिशत घरेलू कार्य करने में व्यतीत करती है।

नर्सों से यह जानना चाहा कि यदि उनके पास पर्याप्त समय हो तो वे उसका उपयोग किस कार्य में करना सर्वाधिक पसन्द करेंगे। 38.3 प्रतिशत नर्सें पर्याप्त समय की उपलब्धता होने पर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में लगाना चाहती है। वहीं 12.7 प्रतिशत यह मानती है कि वे सार्वजनिक कार्यों में अतिरिक्त समय लगायेंगे।49 प्रतिशत नर्सें यह मानती है कि वे उनके पास पर्याप्त समय हो तो वे उसे नर्सिंग योग्यता बढ़ाने में करना सर्वाधिक पसन्द करेंगी।

दूरदर्शन देखने वाले नर्सों का अधिक प्रतिशत है जिसमें नियमित और कभी–कभी देखने वाले सम्मिलित है। दूरदर्शन देखना व्यक्ति की रूचि नहीं, आदत भी बनती जा रही है।

नियमित समाचार–पत्र पढ़ना 97 प्रतिशत नर्सें पसन्द करती है जबकि मात्र 3 प्रतिशत नर्सें समाचार–पत्र पढ़ने में रूचि नहीं रखती है।

नर्सें किस प्रकार की पत्रिकाएं पसंद करती है, यह जानने पर 4.3 प्रतिशत नर्सें फिल्मी, 28 प्रतिशत पारिवारिक एवं सामाजिक, 1 प्रतिशत ने सेक्स एवं रोमांस की पत्रिकाएँ पढ़ने में अपनी पसन्दगी अभिव्यक्त की। 4.7 प्रतिशत खेलकूद, 46 प्रतिशत स्वास्थ्य से जुड़ी पत्रिकाएँ तथा 16 प्रतिशत राजनौतिक पत्रिकाएँ पढ़ना पसन्द करती हैं।

देश की विभिन्न घटनाओं पर 97 प्रतिशत नर्सें चर्चा करती है। जबकि 3 प्रतिशत चर्चा नहीं करती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नर्सों की तीन प्रमुख रूचियाँ नर्सिंग सेवा, टी. वी. एवं पर्यटन हैं वे सामाजिक कार्यों में रूचि लेती है। वे अपने खाली समय का अधिकतर उपयोग घरेलू कार्यों में करती है। यदि उनके पास पर्याप्त समय हो तो वे उसे अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में व्यतीत करेंगी। नर्सें दूरदर्शन देखती है तथा नियमित समाचार–पत्र पढ़ती है। अधिकांश नर्सें स्वास्थ्य पत्रिकाएँ पढ़ना पसन्द करती हे। नर्सें राजनीति में रूचि लेती है तथा देश की विभिन्न घटनाओं पर चर्चा करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खन्ना, एस. के. तथा दास (1990) : नर्सेस एवं उनका सामाजिक व्यवसायिक पक्ष, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
2. डोर, एस. (2004): मेल नर्सेस, सिकिंग फल होल्ड इन ए फैमीन वर्ल्ड, डब्लू एक्सप्रेस हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट डॉट कॉम।
3. जय लक्ष्मी डी0 (1990) : नर्सेस रोल परफोरमेन्स, ए रिसर्च स्टडी दे नर्सिंग जर्नल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
4. नेजीफर एम0 हण्ट (1986) : नर्सिंग केयर प्लान्स द नर्सिंग प्रोसेस एट वर्क, जॉन वीले एण्ड सन्स।
5. शान्ता मोहन (1985) : स्टटस ऑफ नर्सेस इन उण्डिया, ए उत्पाल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. ओमेन, टी. के0 : डॉक्टर्स एण्ड नर्सेस।
7. चन्दनी, अम्बिका : द मेडिकल प्रोफेसन : ए सोशियोलॉजिकल एक्सपलोरेशन।
8. डेनटन : मेडिकल सोशियोलॉजी।
9. अडवाणी, एम. : डॉक्टर – पेशेन्ट रिलेशनशीप इन इण्डियन हॉस्पीटल।
10. हसन, ए. : हेल्थ, कल्चर एण्ड कम्युनिटी।
11. फ्रीमैन, एच. इट अल : हैन्ड–बुक ऑफ मेडिकल सोशियोलॉजी।
12. मदन, टी. एन. : डॉक्टर एण्ड सोसायटी।

*****